International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-1 January-February-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

भारतीय युवाओं में उभरती हुई आधुनिक जीवन शैलीके सन्दर्भ में अध्ययन

रीना मौर्या
शोधार्थी, ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान
द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर(उत्तर प्रदेश)

डॉ. चंद्रकांत चावला
शोध निर्देशक , ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान
द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

प्रस्तावना

नगरीकरण परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके कारण ऐसे मावन अधिवासका पार्दुभाव होता है जिसकी एक पारिस्थितिकी तथा एक जीवन शैलीहोती है जो ग्रामीण अधिवास तथा उसकी जीवन शैली से बहुत हटकर होती है। समाज वैज्ञानिको की □□□□ में यह सभ्यता और विकास की ओर होने वाला परिवर्तन है। हरबर्ट स्पेन्सर, इसलाइम दुर्खीम, टानीज, मिल्टन सिगर और लुई बर्थ जैसे समाज वैज्ञानिक ने समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया को उद्विकासीय प्रतिमान में देखा। किसी एक भौगोलिक क्षेत्र मे जनसंख्या में बड़ोत्तरी तथा जनसंख्या घनत्व की वृद्धि से नगरीय जीवन शैलीकी विशेषताओं का विकास होता है।

नगरीकरण की शुरूआत के साथ–साथ जनसखं या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व मे ं वृद्धि, विजातीय सम्बन्धों मे वृद्धि, अपेक्षाकृत छोटी और अवैयक्तिक ग्रहस्थ ईकाईयों की संख्या में वृद्धि, व्यक्तिवादिता में वुद्धि, गैर अनुरूपतावादी और गतिशीलता उन्मुख व्यक्तियों में वृद्धि, नगरीकरण से सामाजिक गतिशीलता मे निरन्तर वृद्धि होती है और जिसके फलस्वरूप सामाजिक स्थिति के निर्धारण के रूप में निम्नलिखित तीन कारकों की चर्चा की है–

1. नवीन अवसरों की सम्भावना के जिस समाज के जितने अधिक नये–नये अवसर प्राप्त होगे उस समाज में आगे बढ़ने की सम्भावना भी उतनी ही अधिक होगी।जैसे अंग्रेजों के आने के बाद औद्योगिकरण से नये–नये अवसर प्राप्त हुए जिससे नगरीकरण में वृद्धि हुई।

2. जनांकिकीय क्रियाएं, जिस समाज के अन्तर्गत प्रवास की प्रक्रिया अधिक तेजहोती है। वहां के मूल निवासी एवं प्रवासी व्यक्तियों के बीच पेशों में फेर बदल भी काफी होता है और वहां सामाजिक गतिशीलता स्वाभाविक

रूप से कुछ अधिक होती है। अमेरिकी समाज में जब औद्योगिकरण की प्रक्रिया तेज हुई तो यूरोप एवं दुनिया के अन्य देशों से काफी लोग वहां जा बसें।

आधुनिक युग मे ंशिक्षा आसानी से हर किसी को उपलब्ध है, शिक्षा केप्रचार–प्रसार ने व्यक्ति और समाज के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। शिक्षा के द्वारा जीवन में जीवन में नये अवसर ही नहीं प्राप्त होते है, बल्कि कभी–कभी उच्च शिक्षा मात्र से समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठाबढ़ जाती है। किसी भी समाज में ज्ञानी एवं अज्ञानी व्यक्ति का स्तर समान नहीं होता है। पढ़े–लिखें लोगों की समाज में हर जगह अच्छी प्रतिष्ठा है।

भारत में उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति

भारत में वर्तमान उच्च शिक्षा का प्रारम्भ अंग्रेजी शासनकालमें हुआ तथा सभी कोयह विदित ही है अंग्रेजो ने भारत को जो शिक्षा पद्धति दी उसका उद्देश्य शिक्षार्थियों का समुचित विकास करना न होकर उनको केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना था जो उन्हें नौकरी/रोजगार प्राप्त करने में सहायक हो सके। यद्यपि स्वतन्त्रोत्तर भारत में उच्च शिक्षा में सुधार हेतु बनाए गए अनेक कमीशन, डॉ0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 'द यूनीवर्सिटी एजुकेशन कमीशन 1948–49, डॉ0 डी0एस0 कोठारी की अध्यक्षता में 'कोठारी कमीशन 1964–66, तथा 'नेशनल नॉलेज कमीशन 2006–09, उच्च शिक्षा में परिवर्तन हेतु समय–समय पर दिशानिर्देश देते रहे हैं तथा इससे सम्बन्धित नीतियों के निर्माण मे सहायक रहे हैं, तथापि तब से लेकर अब तक पुरातन शिक्षा पद्धति किसी न किसी रूप में चलती आ रही है। अन्तर केवल इतना है कि अब उन वर्गों को शिक्षा सुविधाएं देने की प्राथमिकता है जिन्हे अब तक शिक्षा से वंचित रखा गया था, ताकि वे बिना किसी भेदभाव के इसका लाभ उठा सकें।

नगरीय युवाओं में उभरती आधुनिक जीवन शैली

यह सत्य है कि नगरीय युवाओं में आधुनिक जीवन शैलीमें परिवर्तन ग्रामीणयुवाओं की तुलना मे अधिक हो रहा हे। नगरीकरण एवं आधुनिकीकरण दोनों आपस में पारस्परिक सम्बन्ध रखते है। नगरीय युवा जन्म से लेकर रोजगार तक अनेक प्रकार के परिवर्तनों का सामना करते है। जिनका प्रभाव उनकी जीवन शैलीपर पड़ता है। नगरीय युवाओं में शिक्षा की व्यवस्था में सुधार एवं विकास के साथ–साथ पाश्चात्य शिक्षा का

प्रभाव पड़ता है जिनका वे अपनी जीवन शैलीमें परिवर्तन स्वेच्छापूर्ण करते है। चलचित्र,रेडियो, मीडिया, इन्टरनेट, टेलीविजन, फेस बुक, मोबाइल, पत्रिकाऐं इत्यादि का नगरीय युवाओं की जीवन शैलीपर प्रभाव पड़ता है। जिनका वे अपनी जीवन शैलीमें प्रयोग करते है। उच्च शिक्षा में यद्यपि अंग्रेजी का महत्वपूर्ण स्थान है नगरीय युवा इसको प्राथमिकताअपेक्षाकृत कम देते है। अंग्रेजी नगरीय युवाओं मे अच्छी न होने की वजह से रोजगार के अवसर कम रहते है और बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। नगरीय युवा बेरोजगार होने के उपरान्त शिक्षा को महत्व कम देते है और आधुनिक जीवन शैलीमें अधिक महत्व देते है जिनका उनके भविष्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता हैं।

जैसे नगरीय युवा टी0वी0 में धारावाहिकों तथा चलचित्रों को देखते है औरउन्ही की तरह परिवार, समाज तथा देश में उनका वास्तविक जीवन में प्रयोग करते है जिसका समाज पर सदैव बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रेस द्वारा जो खबरें अखबारों, पत्रिकाओं में सूचनाएं प्रकाशित की जाती है उनको नगरीय युवा प्राथमिक तौर पर पढ़ने में रूचि रखते है। ये भी कहा जाता है कि अधिकाशतः प्रेस द्वारा प्रकाशित खबरें बढ़ा–चढ़ा कर लिखी जाती है और वे सत्यता के नजदीक नहीं होती है। इन सूचनाओं का प्रभाव युवाओं के मन–मस्तिष्कपर प्रत्यक्ष रूप में पड़ता है और उसे अपनी आधुनिक जीवन शैलीमें अपनाने में अपनी शानसमझते है इससे नगरीय वातावरण दूषित होता है। नगरीय युवाओं की जीवन शैलीमें मोबाइल, इण्टरनेट तथा फेसबुक इत्यादि का प्रभाव पड़ता है। जिनकी वजह से समय, रूपया, मान–सम्मान में कमी आती है और इसके साथ वैमनस्यता, दुश्मनी, नफरत इत्यादि की भावना नगरीय युवाओं में पनपती है। औद्योगिकरण तथा नवीन तकनीकि का विकास नगरो में सर्वप्रथम होता है जिसे नगरीय युवा महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर ही जीवन शैलीके रूप में अपनाना शुरूकर देते है। नगरो ं में मनुष्यके जीवन मे ं सामाजिक एव ं आर्थिक परिवर्तन निरन्तर होता रहता है जिसका प्रभाव नगरीय युवाओं की जीवन शैलीपर पड़ता है नगरीय युवा उसी के अनुसार अपनी जीवन शैलीको अपनाने में विश्वास करते है।

युवाओं को दिशा प्रदान करने में उच्च शिक्षा की भूमिका

किसी भी देश में युवाओं को दिशा प्रदान करने में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्णभूमिका होती है। भारत जैसे परम्परा से आधुनिकता की ओर तेजी से अग्रसर होते समाज में इसका महत्व और भी अधिक हैं। उच्च शिक्षा में युवाओं को उचित दिग्दिशा प्रदान करने की असीम क्षमता होती है। इससे वे देश के सामाजिक

एवं आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते है। उच्च क्षिक्षा एवं तकनीक व व्यवसायिक प्रशिक्षण युवा पीढ़ी को रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, ताकि वे देश के विकास में अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकें। देश को प्रशासनिक अधिकारी देने का कार्य भी उच्च शिक्षासे ही पूरा किया जाता है। उच्च शिक्षा ने जाति व्यवस्था पर आधरित 'बन्द समाज' स्वरूप को ही पूरी तरह से बदल दिया है तथा आज प्रदत्त गुणों का स्थान अर्जित गुणों ने ले लिया है। इसी का परिणाम है कि भारतीय समाज के सभी वर्गों में आशातीत गतिशीलता आई है तथा यूवा पीढ़ी इस गतिशीलता का पूरा लाभ भी उठा पा रही है। पिछले दो दशकों में भूमण्डलीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण की प्रक्रियाओ ंने रोजगार के अवसरों एवं सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता में काफी वृद्धि की है। मैं रोजगार के अवसरों एवं गतिशीलता में वृद्धि के अतिरिक्त उच्च शिक्षा को युवाओं की दृष्टिसे महत्वपूर्ण भूमिका को समझाने हेतु कुछ पहलुओं को आपके समक्ष रखना चाहता हूँः– प्रथम, उच्च शिक्षा युवाओं की मनोवृत्तियों एवं मूल्यों को परिवर्तित करने मेंमहत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस परिवर्तन की दिशा इस बात पर निर्भर करती है कि उन्हें किस प्रकार की शिक्षा दी जा रही है। सामान्यतया यह आशा की जाती है कि इससे उनकी मनोवृत्तियों एवं मूल्यों में जो परिवर्तन होगा, वह आधुनिकता में सहायता देगा। आधुनिकीकरण से सम्बन्धित कुछ ऐसे नवीन मूल्य हैं जिनसे भरपूर युवा पीढ़ी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। इन मूल्यों में मैं परानुभूति, गतिशीलता,व्यक्ति की प्रतिष्ठाऔर समानता, व्यक्ति की स्वतन्त्रता एवं भ्रातृत्व, लौकिकवाद, परिवर्तन के लिए तत्परता, बौद्धिकता एवं विज्ञानवाद को प्रमुख मानता हूँ। न केवल अनेक विद्वानों अपितु नीति–निर्माताओं ने भी उच्च शिक्षा की इस भूमिका को स्वीकार किया है। मैं सी0एल0 आनन्द के इन शब्दों को आपके समक्ष उजागर करना चाहुंगा, ''शिक्षा व्यक्तियों, समूहों और समूचे राष्ट्र एवं वस्तुओं, संस्थाओं, घटनाओं और प्रक्रियाओं के प्रति शिक्षार्थियों के दृष्टिकोण में स्वस्थ परिवर्तन लाती है। इसी भांति, भारत सरकार के उच्च शिक्षा के राज्य मंत्री शशि थरूर ने भी उच्च शिक्षा की भूमिकाको लगभग इन्हीं शब्दों में व्यक्त किया है, ''शिक्षा हमारे देश के सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक रूपान्तरण में महत्वपूर्ण चालक हागी। सुशिक्षित जनसंख्या जो सुसंगत ज्ञान, मनोवृत्तियों एवं क्षमताओं से भरपूर हो, 21वीं शताब्दी में देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य है। वे आगे कहते हैं कि, ''भारत में विश्व स्तर की उच्च शिक्षा व्यवस्था विकास की गति को बनाए रखने हेतु तथा इसकी प्रतियोगी क्षमता को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु एक पूर्व दशा है। वैश्विक अनुभव बताते हैं कि देश के आर्थिक विकास एवं सकल पंजीकरण में न्यूनतम 30 प्रतिशत जीईआर में धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है तथा आर्थिक विकास को बनाए रखने हेतु उच्च शिक्षा में न्यूनतम 30 प्रतिशत जीईआर

की आवश्यकता है। इस न्यूनतम आवश्यकता को प्राप्त करने हेतु उच्च शिक्षा की संस्थाओं में गुणात्मक एवं गणनात्मक सुधार की आवश्यकता है।

द्वितीय, उच्च शिक्षा युवाओं के राजनीतिक समाजीकरण का एक प्रमुख अभिकरणहै जो प्रजातन्त्र और समाजवाद के सुदृढ़ीकरण करने में सहायक है। सम्भवतः इसे सामने रखते हुए भारत में मतदान हेतु आयु 21 से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई है ताकि अधिक से अधिक युवा प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में सहभागी बन सकें। नागरिकता प्रशिक्षण द्वारा उच्च शिक्षा प्रजातन्त्र को मजबूत बनाने में योगदान प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से जहां लोग एक ओर नागरिकों के मौलिक अधिकारों से परिचित होते हैं, वहीं दूसरी और अपने दायित्वों के प्रति भी जागरूक होते हैं। किसी भी प्रजातंत्र के लिए नागरिक प्रशिक्षण एक आवश्यक अंग है। प्रजातन्त्र इसके अभाव में कार्य नहीं कर सकता। एस0एन0 पाना ने इस सन्दर्भ में उचित लिखा है कि, किसी प्रजातन्त्र में शिक्षा व्यक्ति की स्वतन्त्रता और प्रतिष्ठाउत्तरदायी नागरिकता, आर्थिक कार्य क्षमता, आत्म–परितोष और सभी के लिए अवसर की समानता पर जोर देती है। जहां तक समाजवाद का सम्बन्ध है, इसकी अपनी उपलब्धि शिक्षा, विशेष रूप से उच्च शिक्षा, के अभाव में हो नहीं सकती। भारतीय नेताओं ने भारत में समाजवादी प्रतिमान पर समाज की पुर्नरचना का लक्ष्य निर्धारित किया है। यद्यपि चीन अथवा पूर्व सोवियत संघ (रूस) में स्थापित समाजवाद से कुछ अलग हमारे यहां समता , समानता एवं सामाजिक न्याय पर आधरित समाज की रचना का प्रयास किया जा रहां है। यहप्रयास शांतपूर्ण तरीकों और साधनों के द्वारा हो रहा है। यह रक्तिम क्रान्ति का पक्षधरनहीं है। हमारा सामाजवाद सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर आधारित है न कि उसके केन्द्रीकरण पर। इसी भांति , मिश्रित अर्थव्यवस्था भी हमारे समाजवाद का अनूठा लक्षण है। इसमें सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र दोनों को ही अपनी–अपनी भूमिका निभाने के अवसर दिए गए हैं परन्तु पिछड़ें और बाधित वर्गों की उन्नति के लिए विशेषकार्यक्रम चलाए गए हैं। वृहद पैमाने पर औद्योगीकरण के साथ–साथ कुटीर और ग्राम उद्योगों को पनपने के भी समान अवसर प्रदान किए गए हैं। हमारा समाजवाद गांधी, नेहरू, विनोबासमाजवाद की स्थापना के लिए शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षा पद्धतियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है ताकि सामूहिक क्रियाओं के माध्यम से ज्ञानार्जन और प्रयोगवाद को बढ़ावा दिया जा सके। हमारी शिक्षा व्यवस्था में ऐसे प्रयास किए जाने की आवश्यकता है ताकि वह समाजवाद की स्थापना का एक मजबूत आधार बन सके।

तृतीय, उच्च शिक्षा युवा पीढ़ी के दृष्टिकोण को व्यापक एवं वैज्ञानिक बनाती है। जो सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकीकरण हेतु आवश्वयक है। यह सच है कि भारत में विभिन्न धार्मिक समुदायों को अपने प्रयासों से शिक्षा

संस्थान स्थापित करने का अधिकार प्राप्त है। अल्पसंख्यक समूहो द्वारा स्थापित महाविद्यालयों को कुछ विशेषाधिकार भी दिए गए हैं, परन्तु उन्हें साम्प्रदायिक शिक्षा का अधिकार नहीं दिया गया। उन्हें एक सामान्य राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत कार्य करना पड़ता है। प्रादेशिक असन्तुलन, भाषाविवाद अथवा जातिवाद और धर्मान्धता को किसी भी प्रकार से शिक्षा व्यवस्था में नही लाया जा सकता है। यह गैर–कानूनी है। भारतीय संविधान भारत को एक लौकिक राज्य घोषित करता हैं। भारतीय लोकतन्त्र का ढ़ांचा ब्रिटिश शासनकालसे ही लौकिक है। उसके पाठ्यक्रम अपने में अधिकांशतः लौकिक विषयों को ही सम्मिलित करते हैं। स्कूलों और कॉलेजो का वातावरण भी, कम से कम सिद्धान्त में और अधिकांशतः व्यवहार में भी, लौकिक ही है। धार्मिक दृष्सि बहुलवादी भारतीय समाज मे लौकिकवाद का प्रयास सामाजिक एकता की एक आवश्यकता है।

अन्त में मैं आप सबका ध्यान युवा पीढ़ी हेतु उच्च शिक्षा की एक अन्य महत्वपूर्णभूमिका की ओर भी दिलाना चाहता हूँ। यह भूमिका मानव, बौद्धिक एवं सामाजिक पूंजी के विकास से सम्बन्धित है। उत्पादन में भौतिक वस्तु रूपी पूजी ही नहीं लगती, वरन्मानव संसाधनों के रूप में पूंजी प्रयोग होती है। इसीलिए शिक्षित एवं प्रशिक्षित युवाओं को अनेक विद्वानों ने मानव पूंजी का नाम दिया है। उच्च शिक्षा का प्रसार सीधे रूप से मानव पूंजी के विकास को प्रकट करता है। क्योंकि वह मानव के गुणों और क्षमताओं में वृद्धि करता है। साथ, ही आज के युग में ज्ञान ऊर्जा का स्रोत है। इसीलिए ज्ञान को भी पूंजी कहा गया है। सामाजिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण में पूंजी की बहुत आवश्यकता होती है। उच्च शिक्षा व्यवस्था के बडे–बड़े वैज्ञानिक और तकनीकि अनुसन्धान केन्द्र निरन्तर ज्ञान और विज्ञान की वृद्धि में लगे रहते हैं। सामाजिक विज्ञान समाज को उन्नत और समृद्ध बनाने के आधारभूत नियमों की खोज करते हैं। मानविकी के विषय समाज के सौन्दर्यबोध और अभिव्यक्ति की नई विधाएं खोजते हैं। इस प्रकार, शिक्षा बौद्धिक पूंजी अर्थात् ज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नगरीय युवाओंकी जीवन शैलीमें परिवर्तन के अनेक कारक अथवा घटक जिम्मेदार है। जैसे संचार माध्यम टेलीविजल, अखबार, विज्ञान तथा तकनीक का विकास, पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव, मोबाइल फोन, सिनेमा (चलचित्र) तथा वैश्वीकरण एवं उदारीकरण इत्यादि। उत्तरदाताओं के अनुसार जीवन शैलीमें अत्यधिक प्रभाव पड़ा है तथा इस परिवर्तन से

शिक्षित बेरोजगारी में आधारभूत वृद्धि हुई है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि नगरीय युवाओं में अनेक प्रकार की जीवन शैलीविकसित हो रही है। जीवन शैलीमें अनेक परिवर्तन हो रहे है। जैसे खानपान तथा रहन–सहन में परिवर्तन, आदर, आज्ञा तथा सत्कार का अभाव, शिक्षा का राजनीतिकरण, शिष्टता तथा अनुशासन का अभाव, नैतिक मूल्यों का ह्रास, संयुक्त परिवार प्रथा की अवहेलना, अवसरवाद तथा प्रतियोगिता का अभाव इत्यादि। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नगरीय युवाओं की जीवन शैलीमें परिवर्तन अनेक प्रकार से हो रहा है जिसके लिए अनेक कारक जिम्मेदार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. GOI, Education and National Development (Report of the Education Commission 1964-66), Vol. III, New Delhi : NCERT, 1966.
2. NAAC, Quality Assurance in Higher Education : An Introduction. Bangalore : National Assessment and Accreditation Council, 2007.
3. C.L. Anand, "Modernization and Tradition' in P.R. Nayar, P.N. Dave and Kamla Arora (Eds.), The Teacher and Education in Emerging Indian Society, New Delhi : NCERT, 1982, p. 61.
4. Shashi Tharoor, Ibid, Note 4. 5. Shashi Tharoor, Ibid, Note 4.
6. S.N. Pam, "Education and Social Transformation : Eduation and Politics" in P.R. Nayar, P.N. Dave and Kamla Arora (eds.), The Teacher and Education in Emerging Indian Society, New Delhi : NCERT, 1982, p. 181.
7. John Vaizey, Education in the Modern Word, London : Weidenfeld and Nicolsoin, 196